"सामाज में व्यक्ति जीवन के प्रति जो धारणा विकसीत करता है, या धारणा करता है वही धर्म है।"

• भारतीय संस्कृति और धर्म : हमारी भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे जटील संस्कृतियों में से एक है। भारत कई धर्मो की महत्वपूर्ण आबादी वाली भूमि है। भारत में नास्तिकों और अज्ञेयवादियों की भी बड़ी आबादी है। भारतीय संविधान धर्म की स्वतन्त्रता की गारंटी देता है।

भारतीय संस्कृति और धर्म के बीच का सम्बन्ध अत्यन्त जटिल है। धर्म भारतीय संस्कृति का अत्यन्त महत्वपूर्ण हिस्सा है, अधिकांश लोग किसी ना किसी रूप में धर्म का पालन करता है। इन सबके बावजुद भारतीय संस्कृति भी धर्मनिर्पेक्ष है, यहाँ बहुत से लोग किसी भी धर्म का पालन नहीं करते हैं।

भारतीय संस्कृति धर्म से अत्यधिक प्रभावित है। भारतीय संस्कृति के कई पहलू हैं, जैसे : जाति व्यवस्था की उत्पत्ति धर्म से हुई है। भारतीय राजनीति और समाज में धर्म भी एक भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए ; हिन्दु आबादी का बहुमत है, और हिन्दु धर्म का भारतीय संस्कृति पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। इस बीच मुसलमान एक बड़ा अल्पसंख्यक वर्ग है और इस प्रकार इस्लाम का भारतीय संस्कृति पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव है। हमारे भारतीय धर्म एवं दर्शन में अध्यात्मिकता का भी परस्पर सम्बन्ध है। क्योंकि हमारी भारतीय धर्म (संस्कृति + अध्यात्मिकता) दोनो को मिश्रित करता है। ऐसा इसलिए कहा गया है, क्योंकि जो सार्वभौमिक तत्व बताए गये है, उनमें से बहुत सारे अध्यात्म

अध्यात्मिकता : अध्यात्मिकता / अध्यात्मिकता आम तौर पर पारगमन, व्यक्तिगत विकास या आत्म प्राप्ति की खोज को संदर्भित करती है। इसमें अक्सर ध्यान, प्रार्थना या चिंतन जैसे अभ्यास शामिल होते हैं। इसमें दूसरों की सेवा, परोपकारिता या सामाजिक न्याय जैसी नैतिक प्रथाएं भी शामिल हो सकती हैं।

अध्यात्मिकता का तात्पर्य किसी उच्च शक्ति या अलौकिक में विश्वास से भी हो सकता है। कुछ लोगों के लिए, यह एक व्यक्तिगत देवता या देवी हो सकता है; दूसरों के लिए यह प्रकृति, ब्रह्मांड या कुछ और हो सकता है। यही अध्यात्मिकता है, जिसे हमारे भारतीय धर्म एवं दर्शन ने परस्पर रूप से अपनाया। (जिसमें धर्म का रिश्ता संस्कृति से है; और दर्शन खुद अपने-आप में अध्यात्मिकता को दर्शाता है।)